पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.) 05/0084/09-11 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : **9810117464, 9868051444**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
अन्तरंग सभा की बैठक
रविवार, 28 अगस्त 2011
समय : दोपहर 3.00 बजे
स्थान : आर्य समाज, कबीर बस्ती,
पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-7
सभी सदस्य समय पर पहुँचे।
-महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री

वर्ष-*28* अंक-*06* भाद्रपद-*2068* दयानन्दाब्द *188* *16* अगस्त से *31* अगस्त *2011* (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ *4* वार्षिक शुल्क *48* रु.
E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य का आर्य जनता व आर्य युवकों को आह्वान-दिल्ली चलो

रविवार, 4 सितम्बर 2011 को प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक

आर्य समाज, दीवान हॉल, चांदनी चौक, दिल्ली में

परिषद् के 33वें वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन के उपलक्ष्य में

विराट आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्यसमाज की भूमिका पर विचार
देश भर के चुने हुए आर्य युवकों का भव्य समागम
आगामी राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रान्तीय अध्यक्षों की घोषणा
यज्ञ - प्रातः 8.30 से 9.30 बजे तक, जलपान प्रातः 9.30 से 10.30 बजे तक
ऋषि लंगर दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक व सायं जलपान सायं 5.00 से 6.00 बजे तक होगा
समारोह अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

आमंत्रित संन्यासी व विद्वान्

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (चम्बा)	स्वामी आर्यवेश जी	स्वामी यतिश्वरानन्द जी (हरिद्वार)
स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी	स्वामी दिव्यानन्द जी	स्वामी श्रद्धानन्द जी
श्री सत्यव्रत सामवेदी	श्री देवेन्द्रपाल वर्मा	श्री मायाप्रकाश त्यागी
डा. डी.के. गर्ग	श्रीमती विमला ग्रोवर	श्री दीपक भारद्वाज
श्री मनोहर लाल चावला	श्री आनन्द प्रकाश आर्य	श्री जयप्रकाश आर्य
श्री रमाकान्त सारस्वत	श्रीमती शशिप्रभा आर्या	कै. अशोक गुलाटी
डॉ. वीरपाल विद्यालंकार	डा. जयेन्द्र आचार्य	डॉ. धर्मपाल आर्य
श्री धनेश्वर बेहरा	श्री शिववीर शास्त्री	आचार्य प्रेमपाल शास्त्री
आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	श्री कृष्णप्रसाद कौटिल्य	ब्र. विश्वपाल जयन्त

आईये! आर्य समाज में उत्साह व जोश की एक नई लहर पैदा करने के लिए हजारों की संख्या में पहुंचे

निवेदक

आनन्द चौहान	**महेन्द्र भाई**	**रामकुमार सिंह**	**सत्यभूषण आर्य**	**धर्मपाल आर्य**
संरक्षक	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
डॉ. रविकान्त	**दुर्गेश आर्य**	**विश्वनाथ आर्य**	**प्रवीन आर्य**	**देवेन्द्र भगत**
स्वागताध्यक्ष	वरिष्ठ मंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	प्रेस सचिव

शिक्षा वहां, राजनीति यहां

– विजय कुमार

भारत में अधिकांश राजनेता धरती की राजनीति करने का दावा करते हैं, फिर भी धरातल की समस्याएं नहीं सुलझतीं। इसमें एक बड़ा दोष तो वंशवादी लोकतंत्र का है पर उसके साथ ही उनके घरेलू संस्कार और शिक्षा का भी कुछ दोष हो सकता है।

भारत के प्राय: सभी बड़े एवं स्थापित नेताओं के बच्चे पढ़ने के लिए युवावस्था के लगभग 10 वर्ष विदेश में बिताते हैं। यह वही समय है, जब कुछ विचार उनके मस्तिष्क में स्थायी रूप लेते हैं। जीवन के इस निर्णायक मोड़ पर विदेश के विलासितापूर्ण वातावरण का उनके मन पर जो प्रभाव पड़ता है, वह उन्हें भारत की मिट्टी से काट देता है। ऐसे जड़कटे लोग अपने परिवार के प्रभाव से जब राजनीति में आएंगे, तो उनसे कुछ आशा करना व्यर्थ ही है।

1947 से पूर्व कानून की ऊंची शिक्षा पाने के लिए लोग विदेश जाते थे। कोई अपने अभिभावकों के पैसे से वहां रहते थे, तो कोई किसी संस्था या राजा की छात्रवृत्ति से। गांधी जी से लेकर मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल, मालवीय जी, सरदार पटेल, डा. अम्बेडकर आदि ने इंग्लैंड से ही बैरिस्टर की उपाधि पायी। ये सब लोग आगे चलकर राजनीति में आये।

दूसरी ओर राजस्थान और देश के अन्य भागों के राजे-रजवाड़े थे, जहां परम्परा से पिता के बाद गद्दी बड़े पुत्र को मिल जाती थी। अंग्रेजों ने यह अनुभव किया कि इन राजाओं और जमींदारों के प्रति प्रजा में बहुत आदर है। 1857 में कई रजवाड़ों ने अंग्रेजों का विरोध किया था। अंग्रेज वर्तमान के साथ ही सौ साल आगे की बात भी सोचते हैं। उन्होंने सोचा कि वर्तमान राजाओं का मन बदलना तो कठिन है, पर इनके युवराजों के दिमाग में यदि अंग्रेजियत का प्रभाव बैठा दें, तो इनके राजा बनने पर बड़ी सुविधा हो जाएगी।

इस दिशा में काम करते हुए उन्होंने भारत में अंग्रेजी माध्यम के कॉन्वेंट स्कूलों की स्थापना की। इनमें मुख्यत: जमींदारों और राजाओं के बच्चे ही पढ़ते थे। इनके रहने के लिए वैभव और विलासता से परिपूर्ण छात्रावास बनाये गये, जहां ये अपने नौकर-चाकर और घोड़े-बग्घियों के साथ शाही वातावरण में रहते थे।

ये विद्यालय इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से जुड़े थे। अर्थात मैट्रिक उत्तीर्ण कर स्नातक की शिक्षा के लिए छात्रों को इंग्लैंड जाना अनिवार्य था। इंग्लैंड में भी उनके भोजन, आवास आदि की सुविधापूर्ण व्यवस्था की जाती थी। शिक्षा के साथ ही शराब, शबाब और कबाब का भी वहां पूर्ण प्रबन्ध रहता था।

पर अंग्रेजों का उद्देश्य उन्हें केवल पढ़ाना तो नहीं था। अत: उन्हें ईसाइयत के प्रभाव में लाने का प्रयास होता था। इसके लिए उनके पीछे योजनाबद्ध रूप से कई ईसाई लड़कियां लगा दी जाती थीं, जो उन्हें हर प्रकार से भ्रष्ट कर देती थीं। उनके प्रभाव में कुछ लोग ईसाई बन भी जाते थे। जो नहीं बनते थे, उनके मन में भी अंग्रेजों के प्रति सहानुभूति तो उत्पन्न हो ही जाती थी। कुछ युवक लौटते समय इन विषकन्याओं को पत्नी या रखैल के रूप में साथ ले आते थे। ये आगे चलकर उनके राजकाज में खुला हस्तक्षेप करती थीं। ऐसे उदाहरणों से भारत का इतिहास भरा है।

इस प्रकार से अंग्रेजों ने भावी शासकों को वास्तविक धरातल से काटकर एक मायावी दुनिया का आदी बना दिया। केवल भारत में ही नहीं, तो निकटवर्ती श्रीलंका, नेपाल, भूटान, म्यांमार, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि के राजपुत्रों के बारे में भी यही सत्य है।

1947 में अंग्रेज तो चले गये पर उनका बनाया हुआ वातावरण यहीं रह गया। परिणामस्वरूप आज भी अनेक बड़े नेताओं के बच्चे पढ़ने विदेश जाते हैं। वर्तमान युवा सांसदों तथा मंत्रियों के विवरण देखें, तो यह बात स्पष्ट हो जाती है। सोनिया मैडम को तो सब जानते हैं, पर अन्य कई नेताओं की पत्नियां भी विदेशी हैं। इनमें से कितनी षड्यन्त्रपूर्वक साथ आई हैं, कहना कठिन है।

नेताओं की ही तरह अधिकांश उद्योगपति, फिल्म अभिनेता और अब बड़े सरकारी अधिकारियों के बच्चे भी बाहर पढ़ने लगे हैं। इनमें से अधिकांश को योग्यता नहीं, पैसे के बल पर वहां प्रवेश मिलता है। उद्योगपतियों और अभिनेताओं के लिए तो उनका खर्च उठाना सरल है पर बाकी के बच्चे कैसे पढ़ते हैं, यह खोज का विषय है। अभी तक केन्द्र और राज्यों अधिकांशत: कांग्रेस का ही शासन रहा है, इसलिए कांग्रेसी नेताओं के बच्चे ही विदेश जाते थे पर अब अन्य दलों के नेतासुत भी इस लाइन पर लग गये हैं।

यह कहना संभवत: ठीक नहीं होगा कि विदेश में पढ़ाई बहुत अच्छी होती है। अमरीका के कई विश्वविद्यालय फर्जी सिद्ध हो चुके हैं, जहां जाकर भारतीय छात्र पैसा और समय गंवाकर उल्लू बन रहे हैं। आस्ट्रेलिया से भारतीय छात्रों को मारपीट कर भगाया जा रहा है। फिर भी लोग वहां क्यों जाते हैं ?

इसका एक ही मुख्य कारण ध्यान में आता है। जिस व्यक्ति के पास अन्य लोगों से अधिक धन या सत्ताबल आ जाता है, वह स्वयं को कुछ ऊंचा प्रदर्शित करना चाहता है। महंगे भौतिक उपकरण, कपड़े, गाड़ी, विवाह में तड़क-भड़क, बड़ा मकान, दुकान, बच्चों को महंगे विद्यालयों में पढ़ाना आदि इसमें सहायक होते हैं।

देहरादून का मेरा एक मित्र असम में जंगलात विभाग की सेवा में था। उसके अधिकारी ने उसे अपने बच्चे का प्रवेश 'दून स्कूल' में कराने को कहा। मित्र बच्चे को साथ ले आया पर काफी प्रयास के बाद दून स्कूल तो दूर, देहरादून या मसूरी के किसी अच्छे विद्यालय में भी उसे प्रवेश नहीं मिला। जब यह बात अधिकारी को पता लगी, तो उसने कहा कि देहरादून के किसी भी विद्यालय में उसे भर्ती करा दो। यहां से कौन देखने जा रहा है कि वह कहां पढ़ रहा है ? हम तो सबसे यही कहेंगे कि बच्चा 'दून स्कूल' में पढ़ रहा है।

अर्थात यह एक मानसिकता है, जो सम्पन्न वन अधिकारी को अपने बच्चे को देहरादून भेजने के लिए बाध्य करती है। इसी के चलते अति सम्पन्न लोग अपने बच्चों को अमरीका, इंग्लैंड या आस्ट्रेलिया भेजते हैं। ऐसे में इरोड (तामिलनाडु) के जिलाधीश डा. आर. आनंदकुमार प्रशंसनीय है, जिन्होंने अपनी छह वर्षीय बेटी गोपिका को कुमालनकुटी में तमिल माध्यम के सरकारी विद्यालय में कक्षा दो में प्रवेश दिलाया है। उसके प्रवेश से ही पूरे विद्यालय का वातावरण बदल गया। यदि सभी सम्पन्न एवं प्रभावी लोग ऐसा करें, तो सरकारी विद्यालयों की प्रतिष्ठा एवं स्तर स्वयं ही सुधर जाएगा।

पर यहां तो उदाहरण दूसरे प्रकार के ही मिलते हैं। शिक्षा क्षेत्र में भारतीयता को प्रमुखता देने वाले विद्यालयों के पदाधिकारियों के बच्चे प्राय: अंग्रेजी विद्यालयों में पढ़ते मिलते हैं। ये लोग सम्पन्न एवं समाज में प्रभावी होते हैं। वे सोचते हैं कि ये विद्यालय सामान्य लोगों के लिए हैं, हमारे जैसे विशिष्ट लोगों के लिए नहीं। इसके पीछे भी स्वयं को कुछ अलग एवं ऊंचा दिखाने की मानसिकता ही है।

सच तो यह है कि दो रु0 से लेकर 2,000 रु0 महीना शुल्क वाले विद्यालय बच्चों के मन में सदा के लिए ऊंच-नीच की भावना बैठा देते हैं। ऐसे लोग जब किसी प्रभावी स्थान पर बैठते हैं, तो यह भावना उनके निर्णय को भी प्रभावित करती है। अत: देश की एकात्मता के लिए कक्षा दस तक शिक्षा का समान होना अति आवश्यक है।

कई लोग प्राय: विदेश घूमने जाते हैं। यदि उनसे पूछें कि क्या उन्होंने भारत के सब तीर्थ, धाम और पर्यटन स्थल देखे हैं, तो उनका चेहरा उतर जाएगा। उनका उद्देश्य केवल घूमना नहीं है। वे तो अपने पड़ोसी, संबंधियों और सहकर्मियों पर रौब गांठना चाहते हैं।

कहते हैं कि सोना यदि कूड़े के ढेर में भी पड़ा हो, तो उठा लेना चाहिए। ऐसे ही किसी विशेष शिक्षा के लिए विदेश जाना अपराध नहीं है पर उसका उपयोग कितना हो रहा है, यह अवश्य देखना चाहिए। राजनीति का धंधा करने वालों से तो यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए। भारत में विधायक, सांसद या मंत्री की विशिष्ट शैक्षिक योग्यता नहीं देखी जाती। वित्त मंत्री ने अर्थशास्त्र और रक्षा मंत्री ने सैन्य विज्ञान पढ़ा हो, यह आवश्यक नहीं है। इसके लिए तो जाति और क्षेत्र का समीकरण ही पर्याप्त है।

गांधी जी जब अफ्रीका से लौटे, तो गोपाल कृष्ण गोखले के कहने पर वे पूरे भारत में घूमे। उन्होंने गरीबी और अशिक्षा को निकट से देखा और निर्णय लिया कि भारत में काम करने के लिए निर्धन वर्ग की तरह रहना होगा। उन्होंने अपनी लम्बी गुजराती पगड़ी नदी में बहा दी और आजीवन आधी धोती पहनते रहे। इसीलिए वे भारत के मन को समझ पाए और जनता के हृदयहार बन सके।

पर दिन-रात गांधी जी का नाम लेने वाले इन आधुनिक नेता और शासन-प्रशासन के लोगों का व्यवहार बिल्कुल विपरीत है। इसका मुख्य कारण उनकी शिक्षा ही है। भारत की महंगी, अंग्रेजी माधयम वाली और फिर विदेशी शिक्षा उन्हें भारत से काट देती है। ऐसे लोगों के लिए ही किसी ने कहा था –

जड़ों से कटे हुए लोग, टुकड़ों में बंटे हुए लोग
अम्बर की करते हैं बात, गमलों में उगे हुए लोग।।

यद्यपि गांधी, पटेल, अरविंद, सावरकर, अम्बेडकर जैसे लोग अपने घरेलू संस्कारों के कारण विदेश में पढ़ने के बाद भी भारत और भारतीयता के पुजारी बने रहे, पर आज तो घर से लेकर बाहर तक सब ओर कीचड़ है। ऐसे में विदेशी (कु) शिक्षा से विभूषित, भ्रष्ट नेतासुत, जो भावी भारत के भाग्य विधाता बनने को तैयार हैं, देश का कैसा बंटाधार करेंगे, यह देखना अभी बाकी है।

संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम्, सेक्टर 6, नई दिल्ली – 110022, Blog - vijaipath.blogspot.com

पंतजलि योग समिति का जन्तर मन्तर पर धरना

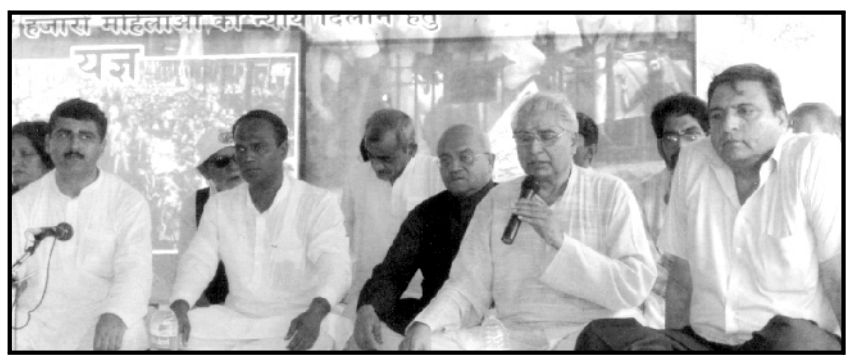

रविवार दिनांक 7 अगस्त 2011 पंतजलि योग समिति के तत्वावधान में भ्रष्टाचार व कालेधन के विरूद्ध जन्तर मंतर नई दिल्ली पर विराट् प्रदर्शन किया गया व श्रीमती राजबाला के स्वास्थ्य लाभ की कामना की गई।

इस अवसर पर आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी सम्बोधित करते हुए। साथ में आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, डा. जयदीप आर्य, डॉ. वेदप्रकाश वैदिक आदि।

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. आर्य संन्यासी स्वामी मेघानन्द जी (मुम्बई) का गत् 19 जुलाई 2011 को निधन हो गया।

2. आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली के श्री विजय कुमार गुप्ता का गत् दिनों निधन हो गया।

3. आर्य समाज अशोक विहार-I, दिल्ली के श्री जी.पी. गुप्ता (पति श्रीमती स्वर्णा गुप्ता) का गत् दिनों निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का युवा संस्कार अभियान प्रारम्भ, 8 दिन में होंगे 30 युवा संस्कार समारोह : 12 से 25 वर्ष तक के 2000 नव युवक आर्य समाज में दीक्षित किये जायेंगे

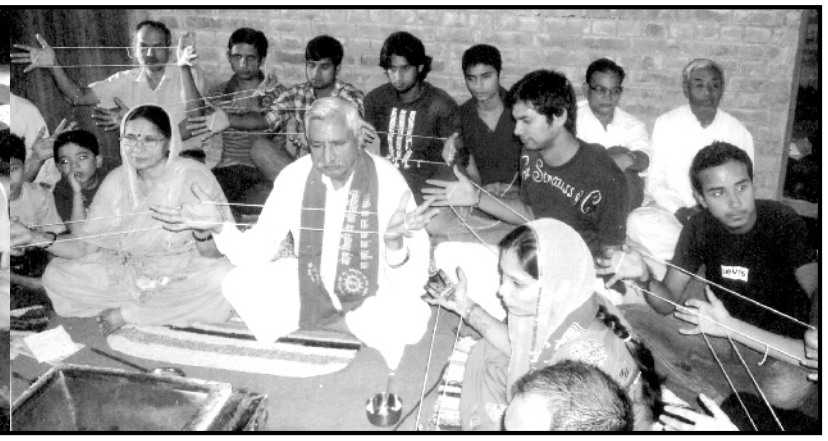

सोमवार 15 अगस्त 2011, नई दिल्ली के संगम विहार क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम में श्री शिशुपाल आर्य भजन सुनाते हुए साथ में ढोलक पर श्री दुष्यन्त आर्य व बायें से श्री देवदत आर्य, डॉ. अनिल आर्य, राम कुमार सिंह, रामफल खर्ब, कृष्णलाल राणा, सामने यज्ञोपवीत ग्रहण करते नवयुवक व आर्यजन।

उल्लेखनीय है कि रविवार 14 अगस्त से रविवार 21 अगस्त 2011 तक परिषद् के तत्वावधान में विभिन्न स्थानों पर 30 कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं जिसमें यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ उन्हें धूम्रपान, अण्डा, मांसाहार, शराब आदि बुराईयों से दूर रहने का संकल्प दिलाया जा रहा है।

गाजियाबाद के नन्दग्राम में 100 युवकों ने लिया यज्ञोपवीत

रविवार, 14 अगस्त 2011 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् गाजियाबाद के तत्वावधान में आर्य समाज नन्दग्राम के 12वें वार्षिकोत्सव पर शान्ति फार्म हाऊस में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्य महेन्द्र भाई जी ने यज्ञ करवाया। आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी ने अध्यक्षता की। डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, सुरेश प्रसाद, प्रेमपाल सिंह, प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य, रमेश चन्द, सत्यपाल देवस, प्रद्योत पराशर, सत्यपाल देवरा, संजीव त्यागी, राहुल आर्य, के.के. यादव, आचार्य सतीश सत्यम्, यज्ञवीर चौहान, जयपाल सिंह, दीनानाथ नागिया, श्रद्धानन्द शर्मा, प्रतिभा सिघंल, चन्द्रमित्र, हर्ष बवेजा, आदि ने अपने विचार रखे। संयोजन श्री सौरभ गुप्ता ने किया।

आर्य समाज प्रशान्त विहार का उत्सव सम्पन्न

रविवार 14 अगस्त 2011 आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। समापन पर सम्बोधित करते डॉ. अनिल आर्य व मंच पर समारोह अध्यक्ष श्री सुधीर खुराना, स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेद भिक्षु, श्री शिवनारायण शास्त्री, पं. सत्यपाल पथिक व श्री दिनेश आर्य पथिक। समारोह का संचालन मंत्री श्री सोहन लाल मुखी ने किया। प्रधान श्री कांति प्रकाश आर्य, संरक्षक श्री दुर्गा प्रसाद कालरा, उप प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहुजा, धर्मपाल परमार, ओमप्रकाश भावल, सूरज गुलाटी, माता जानकी देवी नागपाल, हंसराज डुडेजा, सोहनलाल मेहता के पुरुषार्थ से समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सूर्य निकेतन में स्वतन्त्रता दिवस सम्पन्न

सोमवार, 15 अगस्त 2011, आर्य समाज, सूर्य निकेतन, दिल्ली में स्वतन्त्रता दिवस पर श्री नरेन्द्र आर्य सुमन की भव्य संगीत संध्या का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता माता सुशीला आर्या ने की। श्री यशोवीर आर्य व श्री विकास गोगिया ने संचालन किया। श्री अनिरूद्ध शास्त्री ने यज्ञ करवाया व श्री महेन्द्र भाई जी का प्रवचन हुआ। उपरोक्त चित्र में मुम्बई से पधारे श्री मदन रहेजा का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, रविन्द्र मेहता, यशोवीर आर्य व विकास गोगिया।

सन्देश विहार में युवाओं के कार्यक्रम

रविवार 14 अगस्त 2011, आर्य समाज, सन्देश विहार, दिल्ली में श्रीमती सीमा कपूर के संयोजन में 25 बच्चों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया, युवक ही ब्रह्मा, भजन, प्रवचनकर्त्ता रहे। श्री दुर्गेश आर्य ने संचालन किया। श्री शिशुपाल आर्य, श्री रामकुमार सिंह, दिनेश आर्य, रामचन्द्र आर्य, विजय आर्य, तृप्ता आहूजा, देवमित्र आर्य आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

बाल्मिकी मन्दिर नरेला में यज्ञोपवीत समारोह

रविवार, 14 अगस्त 2011 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में बाल्मिकी मन्दिर, रविदास नगर, नरेला, दिल्ली में यज्ञोपवीत संस्कार समारोह का आयोजन किया गया। आचार्य अनिरूद्ध शास्त्री न यज्ञ करवाया। श्री शिशुपाल आर्य, दुष्यन्त आर्य के भजन हुए तथा श्री अरुण आर्य ने संचालन किया।

ईशान इन्सटिट्यूट ग्रेटर नोएडा का 17 वां स्थापना दिवस सम्पन्न

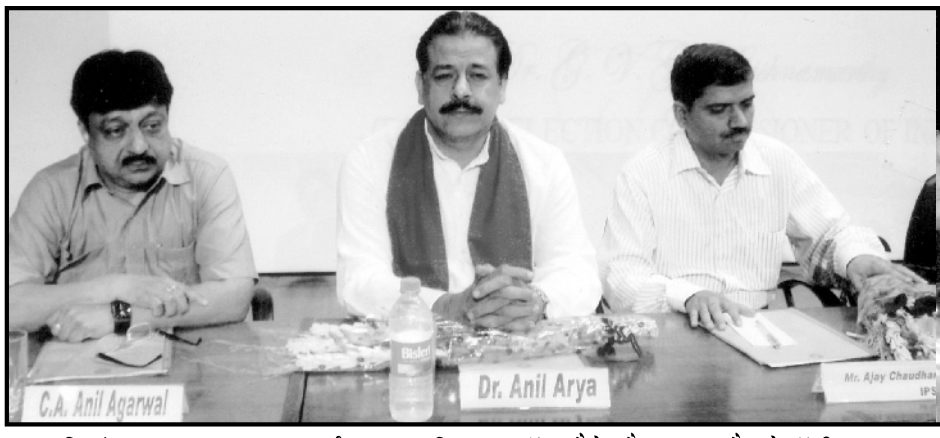

दिनांक 11 अगस्त 2011, ईशान इन्सटिट्यूट ऑफ मैनेजमैन्ट एण्ड टैक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा का 17 वां स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मंच पर सी.ए. श्री अनिल अग्रवाल, डॉ. अनिल आर्य, श्री अजय चौधरी (ज्वाइंट पुलिस कमिशनर, दिल्ली पुलिस) व दायें चित्र में परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते संस्थान के अध्यक्ष डॉ. डी.के. गर्ग व मुख्य अतिथि डॉ. जी.वी.जी. कृष्णामूर्ति (पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त) **-तुषार आर्य**

कृष्णा महेश गायत्री संस्थान सैनिक फार्म में भव्य समारोह सम्पन्न

रविवार 7 अगस्त 2011 कृष्णा महेश गायत्री संस्थान व आर्य समाज सैनिक फार्म धर्मार्थ समिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में वैदिक सत्संग व तीज उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। यज्ञ आचार्य महावीर शास्त्री ने करवाया। आचार्य डॉ. उषा शास्त्री, आचार्य सुमेधा जी, महेन्द्र भाई जी, माता शकुन्तला आर्या के उद्बोधन हुए। श्रीमती सुदेश आर्या व श्री सुरेश रहेजा का मधुर संगीत कार्यक्रम रहा। श्री नवीन रहेजा के सानिध्य में कार्यक्रम शानदार सफलता से सम्पन्न हुआ अध्यक्षता श्री दर्शन अग्निहोत्री ने की व संचालन डॉ अनिल आर्य ने किया। वैदिक विद्वान् डॉ धर्मेन्द्र शास्त्री, श्रीमती प्रभा सेठी, श्रीमती निर्मल रहेजा, श्री बीरेश रहेजा, संजना राणा, इन्दु, डॉ. सुनील रहेजा, देवदत आर्य, चतर सिंह नागर, संजीव सिक्का व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सुन्दर प्रीतिभोज का आनन्द लेकर सभी विदा हुए।

पाकिस्तान में हिन्दू संकट में

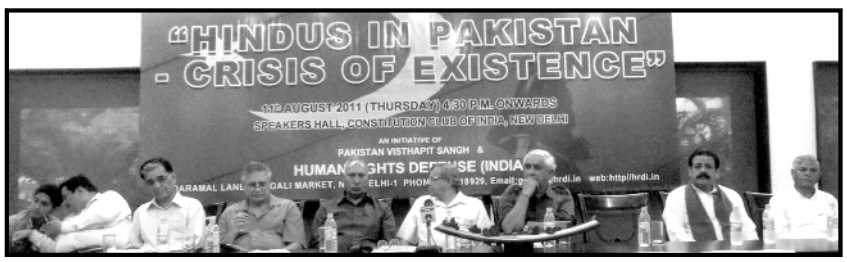

दिनांक 11 अगस्त 2011 ह्यूमन राईटस डिफेन्स भारत के तत्वावधान में श्री राजेश गोगना एडवोकेट के संयोजन में ''हिन्दूज इन पाकिस्तान क्राईसिस ऑफ एक्सटेन्स'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन कॉन्सटियूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में किया गया।

उपरोक्त चित्र में श्री जसंवत सिंह (पूर्व विदेश मंत्री), डॉ. अनिल आर्य, श्री शिव खेड़ा, डॉ. जे.के. बजाज, श्री लक्ष्मणदास, श्री एम.एन. कृष्णामूर्ति एडवोकेट, गोपाल के. अग्रवाल, आदि ने अपने इस ज्वलन्त समस्या पर विचार रखे।

जनकपुरी के पार्कों में यज्ञ का आयोजन

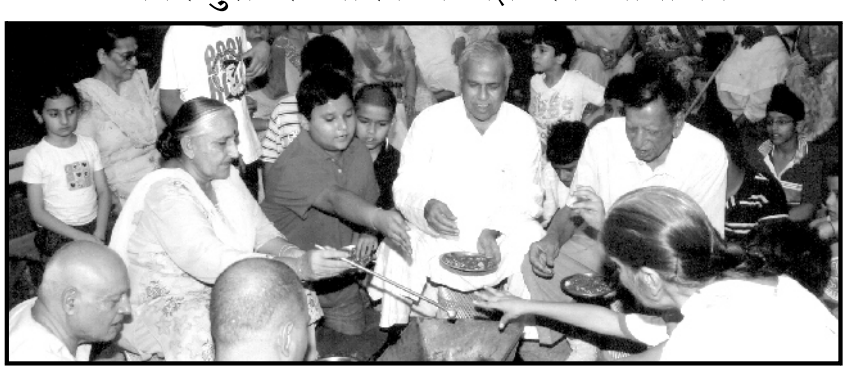

आर्य समाज, बी ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली में यज्ञ संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रविवार दिनांक 03.07.2011 को बी-3, ब्लॉक के पार्क में भव्य यज्ञ का आयोजन किया। धर्माचार्य श्री योगेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के यशस्वी प्रधान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने यज्ञ एवं संध्या पर प्रकाश डाला। श्रीमती सुनीता सहदेव मुख्य यजमान रहीं। **-योगेश्वरचन्द्रार्य**

लाला दीपचन्द आर्य का अभिनन्दन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बिजनौर के तत्वावधान में आर्यसमाज, भौजपुर में कर्मठ आर्य समाज सेवी, दानवीर, यज्ञ प्रेमी श्री दीपचन्द आर्य (कीरतपुर) का शॉल भेंट कर भव्य अभिनन्दन किया गया। तदर्थ बधाई।

श्री अमर ऐरी प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, मरिखम, कनाडा के चुनाव में श्री अमर ऐरी-प्रधान, श्री सुदर्शन बेरी-उपप्रधान, श्री यश कपूर-महामन्त्री व श्री रणवीर घई-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। युवा उद्घोष की ओर से हार्दिक बधाई।

251 कुण्डीय यज्ञ व आर्य महासम्मेलन 2012

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 27, 28, 29 जनवरी 2012 को 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन रामलीला मैदान, जी.टी.बी. एनक्लेव, दिलशाद गार्डन, पूर्वी दिल्ली में होगा। सभी आर्य समाजें, आर्य जन उपरोक्त तिथियां नोट कर लें।

भवदीय

डॉ. अनिल आर्य	**महेन्द्रभाई**	**रामकुमार सिंह**	**यशोवीर आर्य**
अध्यक्ष	महामन्त्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09312406810